Result Mitra Daily Magazine

महाराजा दिग्विजय सिंह

❖ **हालिया संदर्भ :**

- हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पोलैंड की यात्रा पर गए थे, जिस दौरान वे वार्सा में भारतीय राजा की याद में बनाए गए एक मेमोरियल पर भी गए।

❖ **मेमोरियल :**

- वार्सा में "Square of Good Maharaja" नामक एक मेमोरियल है, जो महाराजा दिग्विजय सिंह जी को सम्मान देने के लिये बनाया गया है।
- इसके अलावा महाराजा के नाम पर पोलैंड में एक स्कूल भी है।
- दरअसल जब पोलिश (पोलैंड के लोग) निर्वाचित सरकार के प्रधानमंत्री व्लादिस्लाव सिकोरस्की ने महाराजा से उनकी उदारता का बदला चुकाने के लिये उपाय सुझाने

Result Mitra

को कहा तो महाराजा ने अपने नाम पर पोलैंड में एक स्कूल खोलने की इच्छा जताई थी।

❖ महाराजा :

- महाराजा दिग्विजय सिंह का जन्म 18 सितम्बर 1895 को हुआ था एवं उनका निधन 3 फरवरी 1966 को हुआ।
- इनके पिता का नाम महाराजा रणजीत सिंह था, जिनके नाम पर 'रणजी ट्रॉफी' क्रिकेट टूर्नामेंट कराया जाता है।
- ये नवानगर (वर्तमान जामनगर) के राजा थे।
- इन्हें जाम साहिब के नाम से भी जाना जाता है।
- ये यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से ग्रेजुएट थे एवं इन्होंने 2 दशक तक ब्रिटिश आर्मी में सेकेण्ड लेफ्टिनेंट के पद पर कार्य किया।
- इन्होंने 1933-1944 तक चैंबर ऑफ प्रिंसेस के चांसलर के रूप में भी कार्य किया।

❖ मेमोरियल कार्य :

- महाराजा ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय पोलैंड के निर्वासित लोगों को अपने राज्य में शरण दी थी।
- महाराजा ने 1942 में जामनगर-बालचडी में एक रिफ्यूजी कैंप स्थापित किया एवं 1000 पोलिश बच्चों को न सिर्फ शरण दिया बल्कि उनके सामान्य जीवन-जीने के लिये हर संभव प्रयास किया।
- बालचडी में सुविधा का निर्माण जाम साहब ने स्वयं करवाया, जिसमें 60 इमारतों के अलावा स्कूल, किंडरगार्टन (बच्चों के खेलने के लिये), सभागार, खेल के मैदान, स्विमिंग पूल, चिकित्सा सुविधाएं, टेनिस कोर्ट जैसी सुविधाएं थी।
- महाराजा ने रिफ्यूजी कैंप में ऐसी व्यवस्था करवा रखी थी कि किसी बच्चे को यह न लगे कि वे युद्ध-निर्वासित जीवन जी रहे हैं।

Result Mitra

- महाराजा ने बच्चों का स्वागत करते हुए कहा था कि "अब वे अनाथ नहीं है, बल्कि वे सभी उनके बच्चे हैं"।
- कैंप में संगीत सुनने एवं बजाने की भी व्यवस्था थी।

❖ ऐतिहासिक परिदृश्य :

- WW-II की शुरूआत 1 सितम्बर 1939 को जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण के साथ हुई।
- सोवियत संघ एवं जर्मनी के बीच मोलोटोव-रिवेंट्रॉप की संधि हुई थी, जिसमें एक-दूसरे पर आक्रमण का सिद्धांत शामिल था, लेकिन पोलैंड पर जर्मनी के आक्रमण के 3 महीने बाद ही संधि को तोडते हुए सोवियत संघ (USSR) ने भी पोलैंड पर हमला कर दिया।
- दरअसल जर्मनी ने पश्चिमी एवं USSR ने पोलैंड के पूर्वी भाग पर कब्जा कर पोलैंड को न केवल विभाजित कर दिया, बल्कि पोलैंड के लोगें एवं सरकार को निर्वासित भी होना पडा।
- निर्वासन के दौरान 3.20-9.80 लाख लोगों (पोलैंड) को मवेशी गाडी के माध्यम से सोवियत संघ के साइबेरिया वाले ठंडे जगह में भेज दिया गया।
- इससे पूर्व नवम्बर 1939 में ब्रिटेन एवं फ्रांस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी थी।
- 22 जून 1941 को जर्मनी ने USSR पर प्रत्यक्ष आक्रमण किया और जर्मनी की सेना मास्को से केवल 320 km दूर रह गई थी।
- 30 जुलाई 1941 को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल के नेतृत्व में USSR ने जोसेफ स्टालिन के साथ समझौता हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 3,89,401 पोलिश नागरिकों को USSR ने मुक्त कर दिया।
- कई पोलिश निर्वासित जीवन के दौरान मारे गए और बचे हुए लोग सोवियत नियंत्रित ईरान के रिफ्यूजी कैंपों में फंसे रहे।

Result Mitra

- पोलिश शरणार्थियों के पास जीवन-यापन का कोई साधन नहीं था और न ही कोई देश उन्हें सहायता पहुँचा रहा था।
- ब्रिटिश ने जरूर इन शरणार्थियों की मदद करने की कोशिश की, लेकिन उनकी मंशा युवा पोलिश को सेना में भर्ती कर मध्य-पूर्व एशिया में अपनी सैन्य स्थिति मजबूत करने की थी।
- ब्रिटेन को जल्द ही समझ आ गया कि यह ला का सौदा नहीं है क्योंकि पोलिश शरणार्थियों में मृत्यु-दर लगातार बढती जा रही थी।

❖ ब्रिटेन की स्थिति :

- चूँकि विस्टन चर्चिल ने ही पोलिश नागरिकों को USSR कब्जे से मुक्त करवाया था, ऐसे में पोलिश निर्वासितों के प्रति उसका दायित्व स्वाभाविक था लेकिन USSR के साथ वह रिश्ते खराब करने के पक्ष में नही थे।
- अंततः ब्रिटेन ने इन शरणार्थियों को स्वीकार करने वाले अन्य देशों को खोजने का प्रयास प्रारंभ किया।

❖ राजकीय प्रयास :

- अक्टूबर 1941 में ब्रिटिश सरकार ने भारत के व्यवसाय से USSR से 500 पोलिश बच्चों को लेने की अपील की, लेकिन वार्ता के कुछ दौर के बाद यह प्रयास असफल हो गया।
- 1942 में इंपीरियल वॉर कैबिनेट की बैठक में महाराजा ने स्थिति को जानकर शरण देने की पेशकश की।
- बालचड शिविर का निर्माण महाराजा ने स्वयं के धन से किया।
- महाराजा ने USSR के साथ संबंधों को खराब किए बिना शरणार्थियों की मदद कर अंग्रेजों को राजनीतिक-कूटनीतिक मार्गदर्शन भी किया।

❖ महाराज का राजनीतिक परिदृश्य :

Result Mitra

- महाराजा की राष्ट्रवादी प्रवृतियाँ बहुत स्पष्ट रूप से उल्लेखित नहीं है लेकिन इतिहासकार मानते हैं कि वे दक्षिणपंथी व्यक्ति थे, जो हिन्दू धर्म के संरक्षण एवं आयुर्वैदिक चिकित्सा के प्रचार के लिये समर्पित थे।
- महाराजा राजनीतिक एवं सामाजिक दोनों ही स्तर पर बहुत शक्तिशाली थे।
- भारतीय रियासतों के कई अन्य शासकों की तरह ही उन्होंने भी राष्ट्रवादी (भारत-आजादी) आंदोलनों का समर्थन करने एवं रियासतों की स्वायत्ता बनाये रखने के बीच में सामंजस्य बनाए रखा।
- म्हाराजा राज्य के संप्रभुता के समर्थक थे और इसी कारण से उन्होंने कांग्रेस के खिलाफ मोहम्मद जिन्ना के मुस्लिम लीग का समर्थन किया था।
- उनका मानना था कि जिला रियासतों के स्वतंत्र अस्तित्व को बने रहने देंगे लेकिन नेहरू रियासतों की स्वायत्ता समाप्त कर देंगे।
- हालांकि दिलचस्प यह है कि महाराजा के विलय पत्र (भारत में रियासतों के विलय संबंधी समझौता पत्र) पर हस्ताक्षर करने वाले शुरूआती राजाओं में थे। साथ ही उन्होंने पश्चिमी भारत को एकीकृत कर स्वतंत्र भारत का अभिन्न अंग बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इसी प्रकार उन्होंने पोलिश शरणार्थियों को ब्रिटिश व्यवस्था के भीतर अपनी वर्चस्वता बनाए रखते हुए सहायता प्रदान की।

❖ पोलिश के प्रति सहानुभूति :

- संभवतः जाम साहब ने पोलिश शरणार्थियों को इसलिये शरण दिया क्योंकि यह भारतीय स्वतंत्रता परिदृश्य से मेल रखता था।
- जिस तरह पोलिश लोग निर्वासित थे, उसी प्रकार भारत भी ब्रिटेन के आधिपत्य में कुछ ऐसा ही महसूस कर रहे थे।
- भारत में पोलिश शरणार्थियों को लाने में भारत में पोलिश महावाणिज्यदूत यूजेनियस बनसिन्स्की की पत्नी किरा बनसिन्स्की का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

Result Mitra

- किरा ने गांधीवादी वांडा डायनोवस्का के साथ मिलकर पोलिश निर्वासितों के बारे में जागरूकता फैलाई, धन जुटाया एवं राजनीतिक-कूटनीतिक स्तर पर भी समर्थन जुटाने में सफल रही।
- महाराजा का बचपन से ही पोलैंड से संबंध था एवं वे पूर्व प्रधानमंत्री इग्नासी पैडरवस्की से भी परिचित थे।

❖ वलीवाडे का शिविर :

- महाराजा ने कोल्हापुर के छत्रपति को भी शरणार्थियों के मदद के लिये मना लिया।
- कोल्हापुर के वलीवाडे कैंप में 5000 से ज्यादा निर्वासितों को शरण दी गई, जिसका नेतृत्व छत्रपति भोंसले ने किया।
- यह शिविर 1950 के दशक तक चलता रहा तथा यहाँ के ज्यादातर शरणार्थी बाद में USA, कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया चले गए।

❖ पोलैंड सरकार की कृतज्ञता :

- महाराजा द्वारा किए गए उपकार को पोलैंड सरकार द्वारा 1989 में सम्मानित किया गया।
- 1989 में नवनिर्वाचित सरकार ने मेमोरियल स्क्वायर का निर्माण करवाया एवं महाराजा को 'Good Maharaja' नाम दिया।

Note :- 1989 तक पोलैंड 'पूर्वी ब्लॉक' के रूप में कम्यूनिस्ट गणराज्य के रूप में रहा, लेकिन 1989 में कम्यूनिस्ट शासन खत्म होने के बाद यह एक नया स्वतंत्र राष्ट्र बना।

- रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारतीय लोगों को पोलैंड ने शरण दी जिन्हें बाद में भारत लाया गया।

Result Mitra

Note :- पोलैंड NATO, EU (यूरोपीय यूनियन) एवं OECD का सदस्य है एवं इसकी गिनती उच्च विकसित देशों एवं यूरोप की बडी अर्थव्यवस्थाओं में होती है।

Result Mitra